B.A (Hons) part I
Subject - HISTORY
Dr Deepak Kumar Rajak
Assistant professor (Guest)
S.R.A.P college. Chakiya.

Date
10.02.2021
10.02.2022

चोल स्थापत्य का विकास

पल्लव कला का आगे का विकास चोल-कला के रूप में देखने को मिलता है। चोल काल में मुख्यतः इमारती मंदिर (स्वतंत्र मंदिर) भी बनाए गए। इस काल में भव्य मंदिरों में —

→ तंजौर का वृहदेश्वर मंदिर तथा
→ गंगैकोण्ड-चोलपुरम का राजराजेश्वर मंदिर महत्वपूर्ण है।

इन मंदिरों में ऊँचे शिखर का निर्माण हुआ। विमान, शिखर और मंडप इन मंदिरों की विशेषताएँ हैं। शिखरें नीचे से ऊपर जाते हुए कई खण्डों में विभाजित हो जाता है। इसे पिरामिडनुमा शिखर कहते हैं। उसके ऊपर स्तूपिका रखी जाती थी। चोलशासकों ने अपने भव्य मंदिरों के माध्यम से अपने राजकीय गौरव को स्पष्ट किया। स्तम्भों पर टिका हुआ हॉल मण्डप कहलाता था तथा चोल मंदिरों में अनेक मण्डपों का निर्माण कराया गया। मंदिरों में गर्भगृह के ऊपर जो उठानी होती है, जो स्तूपिका की ओर चली जाती थी उसे विमान कहा जाता था।

चोल कला की एक महत्वपूर्ण विशेषता है — गोपुरम का विकास। गोपुरम अलंकृत प्रवेश द्वार को कहा जाता था अर्थात जब मंदिर का क्षैतिज विस्तार होने लगा तो फिर उसका प्रवेश द्वार छोटा पड़ने लगा अतः उसके प्रवेश-द्वार को अब ऊँचा उठाया गया। फिर इस प्रवेश द्वार को अलंकृत बनाया जाने लगा। आगे एक ऐसा समय आया जब प्रवेश द्वार का आकार शिखर से भी ऊँचा हो गया तथा वह शिखर से भी अधिक अलंकृत हो गया।

Date
[redacted]
10.02.2022

B.A (Hons) part III
Subject - HISTORY
Dr Deepak Kumar Rajak
Assistant professor (Guest)
Deptt of HISTORY
S.R.A.P College, Chakiya
Date - [redacted] 10.02.2022

सल्तनत कालीन स्थापत्य

भारत में स्थापत्य की प्राबेगन शैली (शहतीरी शैली) प्रचलित थी। इस शैली की विशेषता होती थी स्थापत्य में स्तम्भ एवं शहतीर का प्रयोग। वहीं दूसरी तरफ भारत में तुर्की लोग मेहराबी शैली (अरकुएट शैली) लेकर आए थे। अरकुएट शैली के अंतर्गत मेहराब एवं गुंबद का उपयोग होता है। यह शैली बिजेन्टियायी शैली से ली गई थी। चूँकि इस प्रकार के स्थापत्य में स्तम्भों का प्रयोग नहीं होता है इसलिए मजबूती देने के लिए गार (Mortar) के रूप में चूना तथा जिप्सम का प्रयोग आरंभ हो गया।

आरंभिक स्थापत्य

जब भारत में तुर्कों का आगमन हुआ तो आरंभ में उनके पास नए प्रकार के स्थापत्य का वक्त नहीं था इसलिए उन्होंने भारत में कुछ प्रचलित स्थापत्यों को ही मुस्लिम स्थापत्य के रूप में ढाल लिया। उदाहरण के लिए - कुतुबुद्दीन ऐबक ने - दिल्ली में कुव्वतुल इस्लाम मस्जिद, अजमेर में ढाई दिन का झोपड़ा का निर्माण किया।

इल्बरी वंश के स्थापत्य

किन्तु भारत मे स्थापित होने के पश्चात उन्होंने स्वतंत्र रूप में स्थापत्यों का निर्माण आरंभ किया चूँकि उन्होंने इस्लामी स्थापत्य के निर्माण के लिए भारतीय स्थापत्यकारों को लगाया। अतः भारतीय स्थापत्य की शैली से मुस्लिम

स्थापत्य का प्रभावित होना बहुत ही स्वाभाविक था। फिर आगे विभिन्न वंशो के अधीन मेहराबी शैली तथा शहतीरी शैली के बीच क्रमिक सामंजस्य होता रहा तथा फिर इस सामंजस्य के परिणाम स्वरूप एक स्वतंत्र भारतीय शैली का विकास हुआ।

गुलामी वंश के अधीन इल्तुमिश के द्वारा स्थापत्य का निर्माण आरंभ किया गया। उसने कुतुबुद्दीन ऐबक के द्वारा स्थापित कुतुब मीनार के कार्य को पूरा कराया। फिर उसने अपने बेटे राजकुमार मुहम्मद की स्मृति में सुल्तान-ए-गारी का निर्माण कराया। आगे बलबन का मकबरा को एक महत्वपूर्ण स्थापत्य का दर्जा दिया जाता है तथा यह बताया जाता है कि पहली बार इसी स्थापत्य में वैज्ञानिक प्रकार के गुम्बद का विकास हुआ। किन्तु नवीन शोधों से यह स्थापित होता है कि अलाउद्दीन खिलजी द्वारा निर्मित अलाई दरवाजा प्रथम वैज्ञानिक प्रकार के मेहराब तथा गुम्बद का उदाहरण है।

चित्र

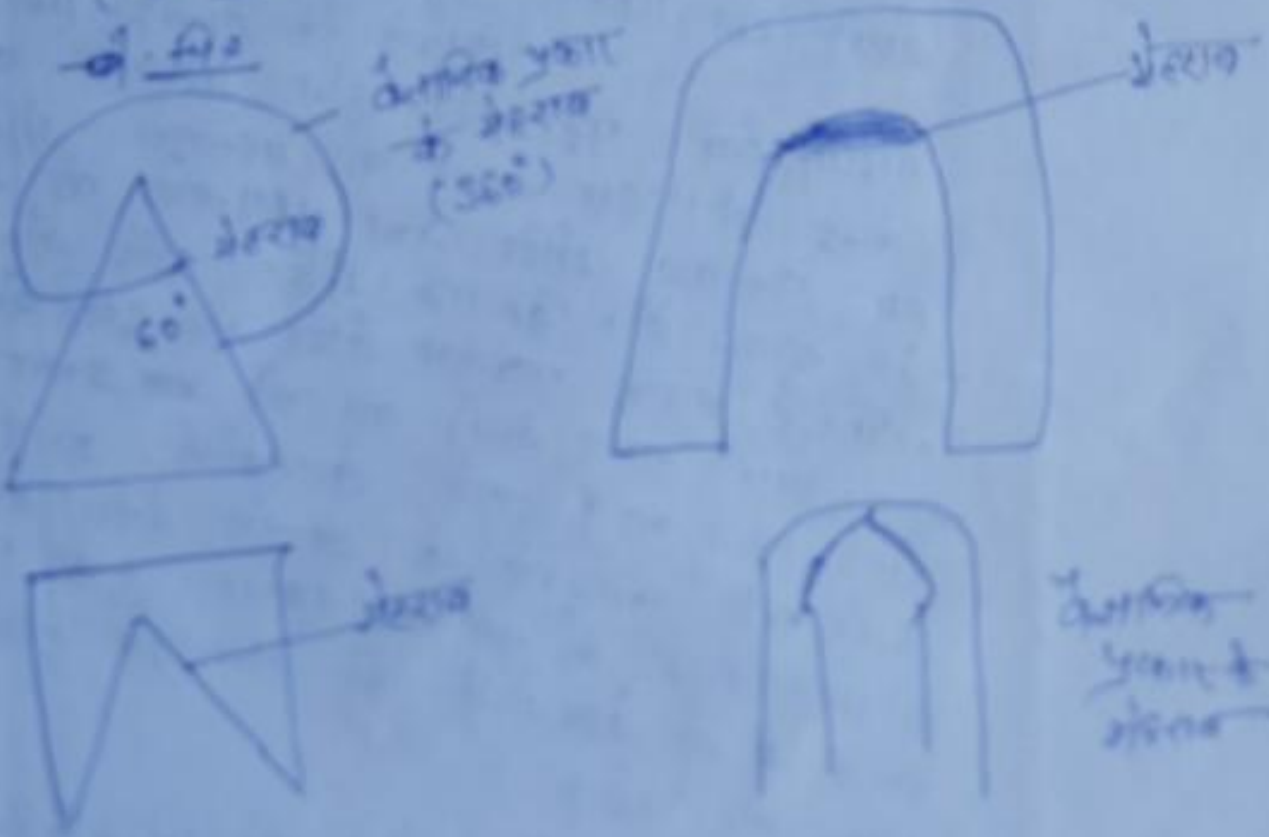

B.A – part I

हड़प्पा सभ्यता

(Harappan Civilization)

Dr. Deepak Kumar Rajak
Guest professor
S.R.A.P. College

Date
[illegible]
11.02.2022

प्र. भारत के लगभग 5000 वर्षों के इतिहास में हड़प्पा सभ्यता विद्वानों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र क्यों रहा ?

(1) यह विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में एक रही थी

(2) यह भारत में प्रथम नगरीकरण का उदाहरण थी।

(3) औपनिवेशिक भारत में कुछ ऐसी महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ सामने आई जिन्होंने संपूर्ण विश्व का ध्यान भारत की ओर खींचा था उनमें से एक है हड़प्पा सभ्यता

(4) भौगोलिक प्रसार की दृष्टि से यह मेसोपोटामिया एवं मिस्र की सभ्यता को मिलाकर भी आगे थी।

Note:- यूरोप में प्राच्यवादियों के अध्ययन के तीन महत्वपूर्ण केन्द्र बने थे एक लंदन दूसरा बर्लिन तीसरा मास्को

(5) खाद्य उत्पादन की अवस्था (The stage of food production) के अन्तर्गत ही भारत का तीन सहस्राब्दी में पहुँचने के तीन सहस्राब्दी के अन्तर्गत ही भारत का विशिष्ट क्षेत्र नगरीकरण की अवस्था में।

हड़प्पा सभ्यता का उद्भव एवं पतन की व्याख्या इतना अधिक विवादास्पद क्यों ?

(1) हड़प्पाई लिपि पढ़ी नहीं जा सकी।

(ii) ब्रिटिश इतने विकसित नगरीय सभ्यता की स्थापना का श्रेय उपनिवेश के लोगों को नहीं देना चाहते थे

Note हड़प्पाई लिपि को पढ़ने का प्रयास विलियम हंटर नामक विद्वान ने किया। फिर I महादेवन ने काम किया

(iii) हड़प्पा सभ्यता के उद्भव से संबंधित विचार

मेसोपोटामियाई उत्पत्ति की अवधारणा

गार्डन एंव मार्टिमर व्हीलर जैसे विद्वानों के द्वारा मेसोपोटामियाई उत्पत्ति की अवधारणा परन्तु यह अवधारणा तार्किक नहीं।

समकालीन सभ्यताओं से निम्नलिखित बातों में पृथक –

① समकालीन मेसोपोटामिया के विपरीत मंदिरों की अनुपस्थिति।

② राज प्रसादों (palaces) की लगभग अनुपस्थिति

③ मृतक संस्कार (The last Burial) की स्थानीय पद्धति

अनुपस्थित

(4) आक्रामक मनोवृत्ति का साक्ष्य नहीं।

(5) समकालीन मेसोपोटामिया से वर्तों की बनावट, मुहर (~~Seal~~) (Seal) एंव मनके निर्माण में अंतर

(6) सबसे प्रमुख और विकसित नगर - निर्माण योजना थी.

कृमिक उद्भव का सिद्धांत

(1) पश्चिम की समृद्ध कृषक बस्तियाँ (3500 BC से 3200 BC)

Note: pre-History में आता है पुरापाषाण काल (एवं मध्यपाषाण काल)

- proto History → लिपि का प्रयोग
  → कृषि कि शुरुआत (लेकिन पढ़ते नहीं)

- proto History में नवपाषाण काल, ताम्रपाषाण काल हड़प्पा सभ्यता

↓

प्रारंभिक हड़प्पा चरण (3200 BC - 2600 BC)

↓ तकनीकी विकास - ताँबा का प्रयोग, ...

हड़प्पा चरण (2600 BC - 1900 BC)

↓ विकसित हड़प्पा सभ्यता

परवर्ती हड़प्पा चरण (1900 BC - 1300 BC)

मॉडल प्रश्न

Q. क्या हड़प्पा सभ्यता का आकस्मात उद्भव हुआ?

Q. क्या मेसोपोटामियाई उत्पत्ति का सिद्धांत हड़प्पा सभ्यता के उद्भव की वास्तविक व्याख्या कर पाया?

Q. हड़प्पाई शासक वर्ग की विलक्षणता क्या है?

- ~~सार्वजनिक~~ सार्वजनिक भवनों के निर्माण पर अधिक खर्च नहीं बल्कि जनसामान्य के जीवन स्तर को ऊँचा उठाना।

(i) बेहतर गवर्नेंस

(ii) युद्ध प्रिय नहीं

हड़प्पा सभ्यता की सर्वाधिक विलक्षण विशेषता

(a) उन्नत नगर निर्माण योजना

(b) विलक्षण जल प्रबंधन

(c) जल संरक्षण पद्धति (Water Harvesting System)

Q. हड़प्पा नगरों में जल प्रबंधन तथा उसकी संरक्षण योजना की विवेचना कीजिए? (सिंधु सरस्वती सभ्यता)

हिन्दी

[redacted]

History of Modern Europe

Dr. Deepak Kumar Rajak
Guest professor
S.R.A.P. College

जर्मनी का एकीकरण

Date 18.02.2021

प्रष्ठभूमि :- जर्मनी का एकीकरण यूरोप में राष्ट्रवाद की शक्ति की विजय थी। मध्य युग से ही जर्मनी को एक समान जर्मन पहचान का आभास था। यह साम्राज्य पवित्र रोमन साम्राज्य का केन्द्र रहा था। फिर मार्टिन लूथर के अन्तर्गत प्रोटेस्टेंट आंदोलन ने भी जर्मन पहचान को प्रोत्साहित किया। स्वयं मार्टिन लूथर ने बाईबिल का अनुवाद जर्मन भाषा में किया।

नेपोलियन का योगदान

जर्मन क्षेत्र में आधुनिक राष्ट्रवाद की चेतना को प्रेरित करने का श्रेय फ्रांस की क्रांति तथा नेपोलियन बोनापार्ट को दिया जा सकता है। नेपोलियन के अन्तर्गत जर्मन क्षेत्र फ्रांसीसी संस्थाओं के सम्पर्क में आया। नेपोलियन ने अनजाने ही विभाजित जर्मन राज्यों को संगठित कर दिया। उसने औपचारिक रूप से पवित्र रोमन साम्राज्य को समाप्त कर दिया। और 1806 में राईन के परिसंघ का गठन किया। सबसे छोटा जर्मन राज्य 200 छोटे राज्यों में विभाजित था। नेपोलियन ने उन्हें संगठित कर 16 बड़े राज्यों में तब्दील कर दिया। फिर नेपोलियन ने इस क्षेत्र में सामंतवाद को समाप्त किया, चर्च को नियंत्रित किया और नेपोलियन कोड लागू कर दिया। इस प्रकार प्राचीन व्यवस्था पर प्रहार कर नेपोलियन के विरुद्ध होने वाले संघर्ष में भी हिस्सा लिया था। यद्यपि नेपोलियन को पराजित करने में यूरोप के महत्वपूर्ण राज्यों की भूमिका रही किंतु जर्मन राज्यों ने इसे अपनी उपलब्धि के तौर लिया। अतः स्वाभाविक रूप से इन राज्यों के बीच एक बंधुता तथा लगाव की भावना विकसित हो गयी थी।

औद्योगिक क्रांति की भूमिका (आर्थिक - औद्योगिक कारक)

इस प्रकार जर्मन राष्ट्रवाद का वैचारिक और सांस्कृतिक आधार

निर्मित हो चुका था। फिर आगे औद्योगिक कारक/कारक ने इस एकीकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। अर्थात यह बात तय हो चुकी थी कि जर्मनी क्षेत्र एक राष्ट्र के रूप में संगठित होगा किन्तु मतभेद यह था कि यह एकीकरण और संगठन किसके नेतृत्व में हो - आस्ट्रिया के नेतृत्व में या प्रशा के नेतृत्व में। आस्ट्रिया के साथ जर्मनी का एकीकरण अधिक ऐतिहासिक होता इसके दो कारण थे। प्रथम आस्ट्रिया पवित्र रोमन साम्राज्य का मुखिया रह चुका था। जबकि जर्मनी पवित्र रोमन का केन्द्रीय क्षेत्र रहा था। दूसरे आस्ट्रिया में एक बड़ी जर्मन जनसंख्या थी। अतः आस्ट्रिया के लिए जर्मनी को अपने में समाहित कर लेना अधिक आसान होता। फिर भी जर्मनी राज्यों ने आस्ट्रिया की जगह प्रशा के साथ विलय का निर्णय लिया। इसका कारण था प्रशा की आर्थिक प्रगति वस्तुतः वियना कांग्रेस में प्रशा से कुछ पोलिश क्षेत्र हस्तगत कर लिया था बदले में उसे कोयला तथा लोहा उत्पादक राईन क्षेत्र प्रदान किया। 1815 के बाद प्रशा में औद्योगिक क्रांति आरम्भ हो गयी। फिर प्रशा सम्पूर्ण जर्मनी क्षेत्र में सबसे औद्योगीकृत राष्ट्र बन गया।

अतः अब जर्मनी पूँजीपति प्रशा के साथ सम्बन्ध बनाए रखना चाहते थे। इससे उनको आर्थिक लाभ था फिर 1830 एवं 1860 के बीच जर्मनी के बाजार का द्रुती से एकीकरण आरम्भ हुआ। 1830-40 के दशक में रेलवे के विकास के कारण जर्मन क्षेत्र का भौगोलिक एकीकरण हुआ। इसी प्रकार 1834 में एक चुंगी संघ का निर्माण हुआ। इस प्रकार क्रमिक रूप से जर्मनी की औद्योगिक प्रगति हो रही थी तथा जर्मनी को एक सशक्त पूँजीपति वर्ग उभर रहा था। फिर अंतर्राष्ट्रीय बजार में जर्मनी पूँजीपतियों की प्रतिस्पर्धा ब्रिटिश पूँजीपति वर्ग को हो रही थी। चूँकि ब्रिटिश पूँजीपति वर्ग को एक सशक्त साम्राज्य का समर्थन प्राप्त था। अतः जर्मन पूँजीपतियों ने भी जर्मन क्षेत्र को एकीकृत कर एक सशक्त राष्ट्र बनाने का निश्चय किया

एक ऐसा राष्ट्र जो ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती दे सके। यही कारण है कि ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन मेनार्ड केन्स ने यह घोषित किया कि यह रक्त और लोहे की नीति नहीं वरन् लोहा और कोयला था जिसने जर्मनी के एकीकरण को संभव बनाया।

दार्शनिकों की भूमिका :- (वैचारिक सांस्कृतिक कारक)

जर्मन चिंतकों ने जर्मन राष्ट्र के विचार को प्रोत्साहन दिया। इनमें जॉन, हीगल, हर्डर, फिक्टे आदि महत्वपूर्ण थे। जॉन में प्रबुद्ध जर्मन दार्शनिक गेटे के मानववाद तथा विश्ववादी नजरिए को अस्वीकार कर दिया तथा बदले में राष्ट्रवाद पर बल दिया। उन्होंने घोषित किया कि मेरा और गेटे का उद्देश्य एक है किन्तु गेटे जिसे मानवतावाद में ढूँढता है मैं उसे राष्ट्रवाद में ढूँढने का प्रयत्न कर रहा हूँ। फिर जॉन हर्डर ने वाकजिस्ट (राष्ट्रीय आत्मा) की अवधारणा रखी और यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि व्यक्ति की ही तरह राष्ट्र की भी आत्मा होती है। हीगेल ने राज्य को गौरवान्वित किया तथा यह घोषित किया कि राज्य इस पृथ्वी पर दैवी-विचार की अभिव्यक्ति है। इस प्रकार जर्मन राष्ट्रवाद की अवधारणा उभर कर आयी अब प्रश्न केवल यह था कि राष्ट्र को राज्य तथा भूभाग का आधार कैसे प्राप्त हो? वस्तुतः राष्ट्र और राज्य के संबंधों को रेखांकित करते हुए जॉन ने घोषित किया कि राष्ट्र के बिना ए राज्य एक कृत्रिम संरचना है तो राज्य के बिना राष्ट्र एक आकारहीन भूत।

Q वह रक्त एवं लोहे की नीति नहीं वह लोहा एवं कोयला था जिसने जर्मनी के एकीकरण को संभव पाया?